Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

भारत की आंतरिक सुरक्षा, अखण्डता एवं विकासः बौद्ध दर्शन के परिप्रेक्ष्य में

श्री शिव प्रसाद पाँचे[1]

सर्वविदित है, कि संसार रूपान्तरण का नियम है अर्थात् समाधान् समस्या के रूप में, समस्या समाधान के रूप में परिवर्तित होता है। इसी क्रम में वर्तमान भारत, जो दुनिया का सबसे बड़ा गणतंत्र है, भी अनेक समस्याओं से ग्रसित है, कि आंतरिक एवं बाहय समस्या यथा–भ्रष्टाचार, कुशासन, अपारदर्शिता, सम्पदायीकरण, जातीयता, भुखमरी, गरीबी, बेरोजगारी, अपराध, मानव तस्तरी, हथियारों की फिरौती, नक्सलवाद, आतंकवाद, सीमा पार अवैध व्यापार, घुसपैठ, इत्यादि से लिप्त है जिसके कारण भारत में आन्तरिक असुरक्षा की भावना, राष्ट्रीय खण्डत्व को बड़ावा तथा विकास को मन्द गति प्राप्त हुई है जो देश के संपूर्ण विकास में बाधक है इस संदर्भ में सरकार द्वारा कई प्रयास किये जा रहे है जो नाकाफी है। इन्ही समस्याओं के समाधान स्वरूप ***बौद्ध दर्षन के परिप्रेक्ष्य मे*** [2] निदान करने की कोशिश की गई है ताकि भारत की आंतरिक सुरक्षा, अखण्डता एवं विकास से आशातीत रूप से पल्लवित किया जा सके।

वस्तुतः बौद्ध दर्शन के परिप्रेक्ष्य में भारतीय गणराज्य की आंतरिक सुरक्षा एवं संरक्षा, उसे अखण्ड एवं एकीकृत बनाये रखने तथा उसके सम्पूर्ण विकास के लिए एप्रोच, बुद्धकाल तथा उत्तरकाल से संबंधित कुछ प्रसंगों तथा उद्धरणो को प्रस्तुत किया जा रहा है जिसमें बुद्ध उपदेश को, जो कि तत्कालीन शासक, शासक राज्य तथा उत्तर बुद्धकाल के शासको ने अनुपालन किया, परिणाम स्वरूप गणराज्य एवं एकराज्य की आंतरिक एवं बाहय प्रक्षेत्रों में चिरकालीक संरक्षा, एकीकरण तथा प्रगति होती रही।

भगवान बुद्ध के समय तत्कालीन उत्तर भारत में वज्जीसंघ अर्थात् लिच्छवियो का गणराज्य बडा संपन्न तथा अतीव शक्तिशाली था जो अपनी

---

[1] **शोधार्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय**

[2] बौद्ध धर्म मीमांसाः बलदेव उपाध्याय, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

तरक्की, वैभव, खुशहाली तथा स्वतंत्रता के लिए प्रख्यात था इस कारण से आसपास के राज्यों को सदैव इर्ष्या, द्वेष होती रहती थी तथा उस पर दुश्मनों जैसे– मगध तथा अन्य राज्यों का आक्रमण होने का खतरा बना रहता था तब लिच्छनियो ने भगवान बुद्ध से अपने राज्य को बचाने का उपाय पूछा, तब भगवान ने ***सात सूत्री*** महत्वपूर्ण उपदेश दिया, यह उपदेश गणतंत्र की की सुरक्षा तथा स्वतंत्र बनाये रखने के लिए ऐसा आप्त वचन था कि इनका पालन करते रहने से सदा अजय रहेंगे जो आज भी भारतीय गणतंत्र ही नही बल्कि किसी भी जनतांत्रिक राज्य के लिए उतना ही प्रसांगिक है और भविष्य में उतने ही प्रसांगिक रहेगा। ये सात उपदेश थे[1]– जिनका सारांस रूप सुगठित, संगठित, एकतापरख रहने की सलाह तथा संतो, अरिहंतो की सेवा से संबंधित था।

इस प्रकार भगवान द्वारा दिया गया वज्जीय गणराज्य की सुरक्षा हित में यह साप्तांगिक उपदेश देकर कहा की वज्जीगण जबतक इनका पालन करते रहेंगे तब तक अजय ही रहेंगे, और वास्तव में इन सभी उपदेशों का पालन करते हुये वज्जी गणराज्य लम्बे समय तक अजय रहा *परंतु* इसके विपरीत एक षड्यंत्र के तहत मगधराज अजातशत्रु के सेनापति वर्षकार की कूटनीतिक रणनीति द्वारा वज्जी गणराज्य, वे कल्याणकारी व्यवहारिक साप्तांगिक उपदेश को भूलाकर अपना सर्वनास कर बैठे, इसकी सारी जिम्मेदारी स्वयं वज्जियों की थी जिसका उन्होंने पालन नहीं किया।

भगवान बुद्ध के समय की और एक प्रसंग पुरातन भारत की गौरवमयी राज्य–व्यवस्था के प्रशिक्षण की एक घटना भगवान बुद्ध ने सुनायी थी। वह उनके अनेक जन्मों पूर्व की घटना थी।

उन दिनों देश में महाविजित नामक एक बहुत पराक्रमी राजा राज्य करता था। उसके राज्यकोष में विपुल धन–संपदा थी। उसके मन में आया कि मैं एक महान यज्ञ थी करूं। इसके लिए उसने राजपुरोहित को बुलाया और अपनी इच्छा प्रकट की। राजपुरोहित धर्म का मर्मज्ञ था। उसने यज्ञ के लिए मना कर दिया।

धर्मप्राण पुरोहित ने कहा, आप ने अभी शासक की जिम्मेदारियां पूरी नहीं की हैं। देश में जगह–जगह डकैतियां होती है, हत्याएं होती है। नगर में चोरियां होती हैं, लूटपाट होती है। यात्रापथों पर भी बटमारी होती है। इस हालत में किया गया यज्ञ पवित्र नहीं कहलायगा। राजा ने कहा, मैं अपराधियों को कठोर दंड दूंगा। कुछ को देशनिकाला भी दे दूंगा। इस पर बुद्धिमान पुरोहित ने कहा कि केवल इतना कर देने मात्र से समस्या का समाधान नहीं होगा। जब तक गरीबी, बेकारी, बेरोजगारी रहेगी, तब तक नये–नये चोर, डाकू, लुटेरे, हत्यारे तैयार होते ही रहेंगे। इस पर राजा ने पूछा तो मैं क्या करूं? तब पंडित पुरोहित ने कहा –

राज्य में जो लोग गो–पालन और खेतीबाड़ी में रूचि रखते है, उन्हें बीज और भोजन प्रदान करो। जो लोग नौकरी करना चाहते हैं, उन्हें वेतन और भत्ता दे कर राज्य शासन के किसी–न–किसी विभाग में नौकरी दो।

---

[1] राजधर्म (बुद्ध वाणी के परिप्रेक्ष में) : विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी नासिक

लोगों के पास ईमानदारी से धन कमाने का साधन हो जायगा तो जुर्म होने अपने आप बंद हो जायेंगे।

राजा ने ऐसा ही किया। अपना धर्म निभाया। उसके अच्छे परिणाम आये और अब पुरोहित ने पवित्र यज्ञ कराया। लोग सुरक्षित रह कर सुखी और समृद्ध हुए। यह अपने प्राचीन भारत का आदर्श राज्य शासन था।

इतना ही नहीं, उस राजा के पास अपनी चतुरंगिणी सेना भी थी जो कि अत्यंत बलशाली थी, जिसके डर से किसी भी हमलावर द्वारा देश की ओर बुरी नजर उठाने की हिम्मत ही न हो सकी।

यह प्रसंग दर्शाता है कि शासकीय नीतियां धर्म–आधारित होनी चाहिएं। इस पर भगवान ने बहुत अधिक जोर दिया है। एक आदर्श शासक कैसा होना चाहिए ? एक आदर्श राज्य कैसा होना चाहिए ? इस विषय पर उन्होंने कई उपदेश दिये हैं जो आज के समय में भी उतने ही उपयुक्त हैं।[1]

एक अन्य प्रसंग में सम्राट अशोक द्वारा देश के आंतरिक शांति तथा सुरक्षा एवं अपनी नीतियों को कारगर बनाने के लिए उठाये गये कदम निम्नानुसार थे–

बुद्धानुयायी सम्राट अशोक ने शिलालेखों से अनेक ऐतिहासिक जानकारियॉं उपलब्ध होती है, सम्राट ने भारतीय प्रजा के मानस को खूब गहराई से समझा था जैसे आज भी देखा जाता है कि ज्यादातर झगड़े या आतंक फैलने के पीछे महत्वपूर्ण कारण विभिन्न धार्मिक मान्यताओं को लेकर पारस्परिक विवाद और उसे लेकर दंगे–फसाद। सम्राट अशोक ने इसे दूर करते हुए ऐसे अनेक उचित कदम उठाये जिनसे आनतरिक शान्ति बनी रहे।

बुद्धानुयायी सम्राट अशोक ने धार्मिक सहिष्णुता बनाये रखते हुए 'धम्म' शब्द प्रयोग किया जिसका अर्थ बड़ा व्यापक है जो 'सबका होता है' जो किसी एक विशेष सम्प्रदाय का नहीं अर्थात सम्राट ने सभी सम्प्रदायों हेतु यथासंभव सहायतार्थ देकर कल्याणपरक कार्य किया चाहे आजीकृम, जैन, बौद्ध, हिन्दु, सम्प्रदाय इत्यादि तथा सबको अपने अपने धार्मिक,सहिष्णु भाव से मत मतान्तर पालन करने की स्वतंत्रता दी जिससे राजा धार्मिक कहलाया।

आगे–और आगे कहा गया

सब्बं, रट्ठं, सुखं सेति, राजा चे होति धम्मिको [2] ।

अर्थात राजा जब धार्मिक होता है तब सारा राष्ट्र सुख की नींद सोता है। राजा धार्मिक होता है तो प्रजा धार्मिक होती है और धार्मिक सदा सुख की नींद सोते है अतएव प्रजा के भले के लिए राजा का धार्मिक होना नितान्त आवश्यक है।

धम्मचारी सुखं सेति [3]

---

[1] बौद्ध धर्म का 2500 वर्षः पी.वी. बापट, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार

[2] अशोक के अभिलेखों का विश्लेषणः विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी नासिक

[3] धम्मपदपालिए 168–169: विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी नासिक

अर्थात धर्म का आचरण करने वाला सुख की नींद सोता है।
शिलालेखों में कहा गया–

सभी सम्प्रदाय वाले सब जगह रहें
अपने सम्प्रदाय की बडाई और अन्य सम्प्रदाय की निंदा न करें
आपसी मेलजोल ही साधु है, उत्तम है।

ऐसे ही में सभी वर्गों का ध्यान रखता हूँ सभी सम्प्रदाय वाले विविध प्रकार की पूजा से मेरे द्वारा पूजित है
सभी मनुष्य मेरी संतान है
देवनांप्रिय प्रियदर्शी राजा सब सम्प्रदाय वालों, गृहत्यागियों और गृहस्थो का सम्मान करता है–

इस प्रकार सम्राट अशोक ने अपने साम्राज्य में प्रजा हितैसी कन्याणकारी योजनाएं तथा सम्प्रदाय विहीन धार्मिक सहिष्णुता नामक कानून शिलालेखों को माध्यम से विज्ञप्त किया जिससे प्रजा धार्मिक सहिष्णुता एवं आजादी के साथ रह सके। इन कानूनों एवं योजनाओं के क्रियान्वयन तथा निगरानी के लिए 'रज्जुक' नाम अधिकारी नियुक्त किया

न्यायपालिका के लिए उसके आदेश बहुत स्पष्ट थे, वेसे ही जैसे कि राजधर्म को समझाते हुए भगवान बुद्ध ने कहा था

''राजा को कोई भी निर्णय जल्दबाजी में नहीं लेना चाहिये। खूब विचार करके करना चाहिये।''

''राजा को मुकदमों का फैसला धर्म से, न्याय से करना चाहिये। राग–द्वेष आदि विकारो से वशीभूत होकर नहीं।''

''यह जरूरी है कि न्याय करने में और दंड देने में पक्षपात नहीं'

अतएवं कहा गया कि भारत के महान सम्राट के ये राजकीय अध्यादेश 'हयूमन राइटस' के, मानवीय अधिकारों के ऐसे ऐतिहासिक उद्घोष है जो सभी अच्छे शासको के लिए सदैव अनुकरणीय रहेगे जिससे राष्ट्र की अतिरिक्त सुरक्षा, अखण्डता एवं विकास प्रबलता से मजबूत होगा।

एवं इस अन्तिम परिच्छेद में बौद्ध दर्शन की अतीव कल्याणपरक व्यवहारिक किन्तु अत्यावश्यक आधारभूत वैज्ञानिक शिक्षा यथा–शील, समाधि एवं प्रज्ञा के अनुपालन तथा उसके सतत अभ्यास से लौकिक–भौतिक जीवन ही नही बल्कि पारलौकिक अध्यात्मिक जीवन पूर्ण रूपेण फलित होता है[1] अतः गणतंत्र भारत की आधारभूत संस्था न्यायपालिका, विधायिका तथा कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार, लचीलापन, नौकरशाही रवैया, अलगावपन, अपारदर्शिता, भाई–भतीजा वाद, सिफारिश वाद को जड़मुक्त रू॰ से समाप्त किया जा सकता है।

इसके व्यवहारिक पहलू जिसमें प्रथमतः शील यानि सदाचार, नैतिक व्यवस्था अर्थात विश्व का सबसे कल्याणकारी नैतिक आचार व्यवस्था है जिससे तन–मन विशुद्ध रहता है तथा द्वितीय समाधि जिसके अन्तर्गत मन को वश में कर नितान्त एकाग्रचित किया जाता है तथा तृतीय प्रज्ञा, के अन्तर्गत विपरण्ना ध्यान के माध्यम से मन को नितान्त निर्मल किया जाता है।

---

[1] Pravachan Saransha: VRI, IGATPURI, NAHIK

इसके व्यावहारिक पहलूओं को सतत् भावित करने मात्र से स्वयं का तो अद्वितीय विकास होता है ही, तो राष्ट्र का विभिन्न आयामों में स्वतः ही आशातीत विकास संभव होगा।
कहा भी गया है–

'हम सुधरेंगे, राष्ट्र सुधरेगा
हम बदलेंगे, राष्ट्र बदलेगा'' [1]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उपर्युक्त प्रसंगो, उदाहरणों तथा जावकों से स्पष्ट है कि बौद्ध दर्शन वर्तमान भारतीय गणतंत्र आन्तरिक सुरक्षा, उसकी अखण्डता तथा उसके सम्पूर्ण विकास ;ब्वउचतमीमदेपअम क्मअमसवचउमदजद्ध यथा–राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक आदि क्षेत्रों के प्रगति में प्रबल योगदान दे सकता है जिसमें बौद्ध दर्शन के सैद्धांतिक पहलू के साथ–साथ व्यवहारिक पहलू को अधिक भावित करना होगा। प्रसंग से स्पष्ट है कि जो विध्वंस वज्जियों का हुआ इससे आज का भारत सबक ले तथा गणराज्य को चिरका तक सुदृढ़ बनाये रखने के लिए एकजुट होकर रहे, राष्ट्र में जो फूट के बीज है, उन्हे दूर करें। राष्ट्र को खंडित करने वाले सारे मुद्दों को हटाकर अखण्डता के पहलुओं को सुदृण करें। और न साम्प्रदायिकता को लेकर देश में फूट पड़े और न जातीयता को लेकर। अस्तु अतीत से सिखकर वर्तमान को सुधारना होगा तभी कल का भविष्य बेहतर होगा। अतएव जब भारत भ्रष्टाचार मुक्त होगा, भयमुक्त होगा आन्तरिक समस्यामुक्त होगा, अखण्डशील होगा, स्वतंत्र मानस से विचरणशील होगा, तभी भारत का प्रत्येक क्षेत्र में संपूर्ण विकास होगा और दुनिया में नाम सरमोर होगा। इसके लिए लोकतंत्र प्रमुख/राजा को कल्याणकारी मानस के साथ–साथ धार्मिक होना अत्यावश्यक है[2] इसलिए कहा गया है –

''देवो वस्सतु कालेन, सस्ससम्पति हेतु च।
फीतो भवतु लोको च, राजा भवतु धम्मिको [3] *।।*

अर्थात अच्छी फसल के लिए समय पर वर्षा हो, देश में समृद्ध हो और देश का राजा धार्मिक हो।

और कहा गया–

'राजा रक्खतु धम्मेन, अतनोव पजं पजं'[4] *।*

अर्थात हमारा राजा भी अपनी प्रजा की रक्षा वैसे ही करे जैसे कि वह अपनी संतान की करता है।

---

[1] Acharya Shriram: Nitidarshan
[2] अशोक के अभिलेखों का विश्लेषणः विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी नासिक
[3] राजधर्म (बुद्ध वाणी के परिप्रेक्ष में): विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी नासिक
[4] राजधर्म (बुद्ध वाणी के परिप्रेक्ष में): विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी नासिक